राम मंदिर के लिए दिल खोलकर धनवर्षा 5
1947 से पूर्व स्वतंत्र करा लिये थे भारत के भाग 8
नेपाल सीमा पर मस्जिद-मदरसे 10
सूखे मेवे का सेवन कैसे करें? 17

पाक्षिक

पाथेय कण

सहयोग राशि ₹ 5

पौष शुक्ल तृतीया, युगाब्द 5122, वि.2077,16 जनवरी, 2021

कण-कण देना, क्षण-क्षण देना, यह जीवन का अर्थ है।
जो जैसे मन से देता है, वह उतना अधिक समर्थ है।।

मंदिर निर्माण में हाथ बढ़ाएं,
आओ प्रभु का घर सजाएं

patheykan@gmail.com www.patheykan.in @patheykan1

आपने लिखा है

अंक संदर्भ : 16 दिसम्बर,2020 व 1 जनवरी, 2021

मुख्यधारा से अलग करने का षड़यंत्र

16 दिसम्बर के अंक में प्रकाशित विशेष रपट 'जम्मू में सरकारी जमीन की संगठित लूट और इस्लामीकरण के प्रयास' पढ़ा। आश्चर्य की बात है किस प्रकार से पद व सत्ता का दुरुपयोग कर लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे हुए हैं। वास्तव में षड़यंत्रकारियों द्वारा 'रोशनी एक्ट' का सहारा लेकर जम्मू-कश्मीर को मुख्यधारा से अलग करने का प्रयास काफी हैरान करने वाला है।

● sheetalpaliwl99@gmail.com

जानकारी अच्छी लगी

पाथेय कण के 16 दिसम्बर अंक में ''स्व' की पहचान' संपादकीय अच्छा लगा। नेपाल को हिन्दू राष्ट्र घोषित कराने के लिए हो रहे आन्दोलन के बारे में दी गई जानकारी अच्छी लगी। अंक में रोशनी एक्ट के अंधियारे के सत्य को जानने का अवसर मिला। तमिलनाडु के वीर कट्टबोम्मन की गाथा प्रेरणादायक लगी।

● neerajsingh1380@gmail.com

भव्य राष्ट्र मंदिर

पाथेय कण का 1 जनवरी,2021 का अंक पढ़ा। आमुख कथा में पूज्य गोविन्द देव गिरी जी महाराज का कथन 'विश्व आस्था का केन्द्र होगा श्रीराम मंदिर' एकदम सटीक एवं सामयिक है।

वास्तव में सभी, जाति, मत, पंथ, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा और प्रांत के लोगों के सहयोग से ही भगवान श्रीराम का मंदिर एक राष्ट्र मंदिर का रूप लेगा।

● **गोविन्द सिंह राठौड़**,रानीखुर्द (पाली)

भटकता किसान आंदोलन

1 जनवरी के अंक में 'भटकता किसान आंदोलन' लेख किसान आंदोलन का सच बताता है। आंदोलन का समर्थन करने वालों को यह सोचना होगा कि यह आंदोलन गलत रास्ते पर जा चुका है। आंदोलन में अपराधियों को छोड़ने के नारे और पोस्टर लग रहे हैं। इसमें टुकड़े-टुकड़े गैंग और देश को नुकसान पहुँचाने वाले लोग शामिल हो गये हैं।

प्रारंभ में तो यह किसान आंदोलन ही लग रहा था। लेकिन धीरे-धीरे वामपंथी विचार रखने वाले किसानों के नेता बन गए। इसलिए वे आंदोलन खत्म नहीं करना चाहते।

केन्द्र सरकार और किसानों के बीच कृषि बिल को लेकर समाधान की बातचीत हो चुकी है। फिर भी आंदोलन जारी है। यह सोचा समझा षड़यंत्र नजर आ रहा है। देश हित में इस आंदोलन का समाप्त होना ही ठीक है।

● **इंदु मोहन जांगिड़**, राजसमंद

पाथेय कण को चाहिए आपका सहयोग

पाथेय कण हेतु सामग्री चयन, लेखन, प्रूफ-रीडिंग आदि कार्यों के लिए जयपुर में रहने वाले ऐसे व्यक्तियों का सहयोग चाहिए जो बिना किसी मानदेय के स्वेच्छा से प्रतिदिन या सप्ताह में 2-3 दिन कार्यालय समय में या 2-3 घंटे के लिए पाथेय भवन आकर सहयोग कर सकें।

संपादक -सम्पर्क : 94143 12288

प्रतिक्रिया-सुझाव भेजें

पाथेय कण में प्रकाशित किसी समाचार/लेख या अन्य सामग्री की विषयवस्तु पर आप की प्रतिक्रिया/राय/टिप्पणी/सुझाव का स्वागत है।

व्हाट्स एप या मेल अथवा पत्र लिखें।

WhatsApp 79765 82011

patheykan@gmail.com

एक मित्र को और पड़ोस के गाँव/बस्ती में सदस्य बनायें

परम सुहृय पाठक-गण,

आपका वर्ष 2020-21 का सदस्यता शुल्क मार्च में समाप्त हो जायेगा। आपको पाथेय-कण लगातार प्राप्त होता रहे इसके लिए कार्यकर्ता आपसे आगामी वर्ष 2021-22 का शुल्क लेने आयेंगे।

आपसे अनुरोध है कि कम से कम एक मित्र को पाथेय-कण का सदस्य अवश्य बनायें। अपने पड़ोसी गाँव या नगर की बस्ती में यह पत्रिका नहीं जाती तो वहाँ भी एक सदस्य बनाने का आपसे आग्रह है। 15 वर्षीय ऑनलाइन शुल्क जमा कराने के लिये पाथेय कण के बैंक खाते का क्रमांक इस प्रकार है-

पाथेय कण संस्थान

(PATHEY KAN SANSTHAN)

बैंक ऑफ बड़ौदा, मालवीय नगर, जयपुर

A/C No. 01130100007568 IFSC CODE : BARB0MALJAI

(PAN No. AAATP2508C)

सदस्यता शुल्क जमा करवाने के पश्चात् कार्यालय में (मो. 9929722111) सूचित अवश्य करें।

पाक्षिक
पाथेय कण

पौष शुक्ल तृतीया
युगाब्द 5122, वि.2077
16 जनवरी, 2021
वर्ष 36 : अंक 16

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
डॉ.रामकरण शर्मा
ज्ञानचंद गोयल

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
[illegible] ₹1[illegible]0/-
पन[illegible] ₹1[illegible]00/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
मो. 9929722111

अंक नहीं मिलने की सूचना अपने नाम व पते सहित व्हाट्स एप (WhatsApp) द्वारा इस मो.न. पर दें।
7976582011

E-mail:patheykan@gmail.com
Website : www.patheykan.in
Twitter : @patheykan1

सम्पादकीय

क्या कभी सोचा था हमने ?

आज से 10-15 वर्ष पूर्व तक क्या हममें से किसी ने सोचा था कि 2021 में भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य मंदिर का निर्माण शुरू हो जायेगा।

कितने-कितने संघर्ष किये गये! बताया जाता है कि 1528 से 1949 तक जन्मभूमि मुक्ति के लिए 76 युद्ध लड़े गये, जिनमें 4 लाख से ज्यादा रामभक्तों ने कुर्बानियाँ दी ।

आजादी के बाद भी 70 वर्षों में हिन्दू समाज ने लगातार संघर्ष किया अपने प्रभु श्रीराम के लिए। रामलला का प्राकट्य, मुजफ्फरनगर के विराट हिन्दू सम्मेलन का प्रस्ताव, श्रीराम-जानकी रथ यात्रा, प्रयाग कुम्भ सम्मेलन, 7 लाख 75 हजार गांवों में रामशिलाओं का पूजन, दलित भाई रामभक्त कामेश्वर चौपाल द्वारा शिलान्यास और राम ज्योति रथ यात्रा।

30 अक्तूबर, 1990 से प्रारम्भ हुई थी प्रथम कार सेवा। हजारों रामभक्त गये थे अयोध्या। जब वे बढ़ रहे थे रामजन्मभूमि की ओर, तो उ.प्र. के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह ने गोलियाँ चलवा दी थीं। रामकुमार कोठारी और शरद कोठारी दो सगे भाई गोलियों से भून दिए गए। उनकी माँ ने दो ही पुत्र जने थे। माँ की गोद सूनी हो गयी थी- रामजी के काज हेतु।

फिर हुई द्वितीय कार सेवा। आडवाणी जी की रथयात्रा। देश भर में गूँजता 'जय श्रीराम' का उद्घोष। रामलला हम आयेंगे, मंदिर वहीं बनायेंगे। 6 दिसम्बर, 1992 को ढांचा ध्वस्त हो गया। न्यायालय में चली लम्बी कानूनी प्रक्रिया। ओह ! हजारों-लाखों कार्यकर्ताओं का परिश्रम। बलिदान! और फिर आया यह दिन। हमारे स्वप्नों के साकार होने का दिन।

हम सभी ने चाहा था राममंदिर। हम सब ने ही तो किया था संघर्ष। दिए थे बलिदान। और अब, जब श्रीराम के मंदिर-निर्माण का समय आया तो उसमें क्या हमारा योगदान नहीं होगा? होगा भी तो कितना?

जो कुछ है हमारे पास, वह सब रामजी का दिया हुआ ही तो है। तब फिर प्रभू ने हमें जितनी सामर्थ्य दी है, क्या उस सामर्थ्य के अनुसार हम अपनी समर्पण निधि अर्पण नहीं करेंगे?

विश्व हिन्दू परिषद-संघ के कार्यकर्ता आयेंगे हमारे पास, उन्हें देनी है अपनी समर्पण निधि। वे नहीं आये तो पहुँचा देनी है श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट को। कितनी? उतनी, जितनी सामर्थ्य रामजी ने हमें दी है- उससे कुछ भी कम नहीं।

तब हमें हमेशा गर्व रहेगा कि श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण में सहयोग करने का हमें भी सौभाग्य मिला था। हमारी संतानों तक को गर्व होगा कि उनके पुरखों ने प्रभु श्रीराम के मंदिर निर्माण में रामजी द्वारा दी गई सामर्थ्य के हिसाब से सहयोग दिया था। ■

ज्ञान गंगा

दानेन प्राप्यते स्वर्गः, श्रीर्दानेनैव लभ्यते।
दानेन शत्रूञ्जयति, व्याधिर्दानेन नश्यति।।

दान से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। दान से ही लक्ष्मी मिलती है। दान से ही मनुष्य शत्रुओं को जीतता है और दान से ही रोग नष्ट होता है।

(सूक्तिनिधि : पृ.22)

राजस्थान में निधि समर्पण अभियान की जोरदार तैयारियां

जन-जन के हृदय में राम जगाना ही लक्ष्य- निम्बाराम

राजस्थान में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण हेतु निधि समर्पण अभियान की व्यापक स्तर पर तैयारियां की जा रही है।

रविवार 3 जनवरी को **जोधपुर प्रांत** के कार्यकर्ताओं की बैठक हनुवंत आदर्श विद्या मंदिर में हुई। बैठक में राजस्थान के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि हजारों वर्षों के बाद श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण का सौभाग्य भारतीयों के लिए स्वाभिमान व उल्लास का विषय है। यह व्यापक जन सम्पर्क अभियान है। जन-जन के हृदय में राम जगाना ही अभियान का लक्ष्य है। **नागौर** में हनुमान बाग स्थित हनुमान मंदिर में बैठक हुई। श्री मुरलीराम महाराज के सानिध्य में जागरण अभियान चलाया जायेगा।

मातृशक्ति भी सक्रिय :-

नोखा के शिशु वाटिका आदर्श विद्या मंदिर में राष्ट्र सेविका समिति तथा अन्य मातृ-संगठनों की बैठक रामजन्मभूमि जन सम्पर्क हेतु हुई। प्रांत प्रचारिका ऋतु शर्मा ने कहा कि निधि समर्पण अभियान का उद्देश्य हिंदू समाज को राम मंदिर निर्माण से जोड़ना है। **जालोर, पीपाड़, बावड़ी, बापिणी, देचू** आदि स्थानों पर बैठकें हुई हैं। अभियान संबंधी पोस्टर का विमोचन किया गया। निधि समर्पण हेतु व्यापक सम्पर्क एवं संग्रह की योजना बनाई गई है।

डेगाना के शारदा बाल निकेतन में कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। बैठक में श्री किशनदास महाराज ने कहा कि परमार्थ के लिये मांगने में शर्म कैसी। **'राम काज कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम'- यह भाव लेकर सामर्थ्य व क्षमता के अनुसार सहयोग प्राप्त करना है।**

नाणा में बेड़ा खंड के सभी ग्राम प्रमुखों की बैठक श्रीराम आश्रम में हुई। बैठक में घर-घर वितरित किये जाने वाले पत्रक का विमोचन किया गया। **पाली** के मंडिया रोड़ स्थित सरस्वती विद्यालय में रविवार 3 जनवरी को बैठक हुई। बैठक में सम्पर्क टोलियों का गठन किया गया।

घड़साना की अग्रवाल धर्मशाला में तथा **जैसलमेर** के आदर्श विद्या मंदिर, गांधी कॉलोनी में अभियान हेतु कार्यालय का शुभारम्भ किया गया। **फलोदी** में जांबापीठ के महंत भगवानदास के सानिध्य में बैठक हुई। दूसरी बैठक जूना अखाड़ा, राधा कृष्ण गौशाला खींचन के महंत दयानंद गिरी के सान्निध्य में हुई। →

सभी राजनैतिक दल, पंथ, वर्गों का सहयोग चाहिए राम मंदिर के लिए-दिनेश चन्द्र

राममंदिर निर्माण में हिन्दू समाज के प्रत्येक पंथ,वर्ग, अमीर-गरीब, सभी राजनैतिक दलों का, सबका सहयोग चाहिए, सभी रामजी के भक्त हैं, यह कहना है विहिप की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री दिनेश चन्द्र का। श्री दिनेश चन्द्र 12 जनवरी को पाथेय भवन में जयपुर के गणमान्य नागरिकों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राममंदिर और उसके विशाल परिसर में 20 अन्य परियोजनाओं के लिए 70 एकड़ जमीन भी कम पड़ रही है। संतों की इच्छा है कि यह सम्पूर्ण क्षेत्र 108 एकड़ का हो।

श्री दिनेश चन्द्र ने आह्वान किया कि हम सब अपने परिवार के सभी सदस्यों को भी राममंदिर के बारे में बताऐं। उनका भी सहयोग प्रभु के मंदिर में होना चाहिए। उन्होंने बताया कि अनेक उद्योग घराने,हॉस्पीटल व अन्य उपक्रमों के प्रमुखों ने बताया है कि वे अपने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को राम मंदिर की जानकारी देकर उनसे सहयोग ले रहे हैं। देशभर से निधि समर्पण के उत्साहजनक समाचार मिल रहे हैं।

देश के कई औद्योगिक घरानों ने प्रस्ताव दिया था राम मंदिर बनाने के लिए, परन्तु राम मंदिर देश के करोड़ों रामभक्तों के सहयोग से बनेगा। सहयोग चाहे हनुमानजी जैसा हो या गिलहरी जैसा। कार्यक्रम में जयपुर प्रांत की निधि समर्पण समिति की घोषणा भी की गई।

जयपुर में सभा को सम्बोधित करते हुए विहिप की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री दिनेश चन्द्र ,मंच पर क्रमशः ओमप्रकाश जी डांगायच,पू.संत भावनाथ जी, पू.संत हरिशंकर जी वेदान्ती एवं पूज्य संत परबसानंद जी महाराज

राममंदिर के लिए दिल खोलकर धनवर्षा

श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण हेतु निधि समर्पण अभियान के अंतर्गत राजस्थान के रामभक्त दिल खोलकर अपनी समर्पण निधि दे रहे हैं। लगता है, मानो होड़ मची हुई है– भगवान के काम में अपना सहयोग देने की। हो भी क्यों नहीं, ऐसा सौभाग्य फिर कब मिलेगा !

कुछ रामभक्तों ने करोड़ों में अपनी समर्पण निधि की घोषणा की है तो कई–कई लाख रु.देने वाले भी बड़ी संख्या में हैं। भगवान के दरबार में तो सब बराबर ही हैं। रामजी ने जो सामर्थ्य दी है, उसके अनुसार देना है।

10,100 एवं 1 हजार के कूपन से समर्पण निधि लेने का कार्य मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ है ही। ज्यादा राशि का समर्पण रसीद के माध्यम से लिया जाना है। 2 हजार रु. से ज्यादा के निधि समर्पण पर आयकर में नियमानुसार कर में छूट रहेगी। समाचार लिखे जाने तक राजस्थान में 100 करोड़ रु.से ज्यादा की राशि रामजी के मंदिर निर्माण हेतु रामभक्तों ने समर्पित की है।

→ **बींझबायला, श्रीविजयनगर, पीलीबंगा एवं मांझूवास** में भी बैठकें हुईं।

सिरोही में कृष्णगंज मंडल की बैठक वेलांगरी स्थित सरतानपुरा हनुमानजी मंदिर में हुई जिसमें **कृष्णगंज, तेलपीखेड़ा, वेलांगरी, बालदा और मीरपुर** के कार्यकर्ता शामिल हुए।

भीलवाड़ा के आ.वि.म. परिसर में प्रांत तथा विभाग समिति के कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। हर रामभक्त को स्वयं भी निधि समर्पण हेतु संकल्प लेना है तथा परिवार के सदस्यों एवं आसपास रहने वालों से भी संकल्प कराना है। **ब्यावर** की कटारिया कॉलोनी स्थित पंचमुखी बालाजी मंदिर में 10 जनवरी को हुई बैठक में उपबस्ती प्रमुख, सहप्रमुख तय किये गये। श्रीराम मंदिर निर्माण को लेकर काफी उत्साह का वातावरण बना हुआ है।

सांगानेर में 9 जनवरी को क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कार्यालय का उद्घाटन करते हुए कहा कि मंदिर हेतु जमीन प्राप्त करने के लिए लाखों लोगों ने कष्ट सहे तथा बलिदान दिया, इसलिए करोड़ों हाथों से करोड़ों घरों के सहयोग से यह मंदिर बने। **टोडारायसिंह** व **मालपुरा** के नागरिकों, जनप्रतिनिधियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं की बैठक 9 जनवरी को टोडारायसिंह में हुई। **निवाई** में भी उत्साहवर्धक वातावरण में बैठक हुई। संत सेवा आश्रम डांगस्थल मुख्यालय पर संत मनीसदास महाराज अद्वैत पलेई के सान्निध्य में बैठक हुई।

भीनमाल बैठक में लघु उद्योग भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने संबोधित किया। **श्रीगंगानगर** में क्षेत्र प्रचारक निम्बाराम जी के सान्निध्य में बड़ी बैठक का आयोजन कर पत्रक का विमोचन किया गया तथा कार्य योजना तैयार की गई। **खींवसर** कस्बे में महंत सूरजनाथ पांचला ने रामजी के मंदिर हेतु गांव–गांव पहुँचकर लोगों से धन संग्रह का आह्वान किया। **टोंक** के अभिज्ञान कॉलेज में जिले के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हुआ। क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने मार्गदर्शन किया।

बारां, रोहट, ओसियां व अन्य जगहों पर भी निधि समर्पण अभियान हेतु तैयारियाँ की गई। टोलियों का निर्माण किया गया ■

श्रीराम मंदिर निधि समर्पण समिति, राजस्थान (संरक्षक मंडल)

1. अग्रपीठाधीश्वर पूज्य संत डॉ.राघवाचार्यजी वेदान्ती–रेवासा धाम, सीकर
2. निम्बार्क पीठाधीश्वर पूज्य श्यामचरण देवाचार्य श्रीजी महाराज–सलेमाबाद
3. श्री श्री 1008 दादू सम्प्रदाय पूज्य महन्त गोपालदास जी महाराज नरैना पीठाधीश्वर–नरैना
4. पूज्य संत श्री खोजीजी द्वारकाचार्य रामरिछपालदास देवाचार्यजी महाराज–त्रिवेणी धाम, शाहपुरा, जयपुर
5. महामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी हंसाराम उदासी–अध्यक्ष हरी शेवा संस्थान, भीलवाड़ा
6. श्रीमद्जगद्गुरु विजयराम रावल द्वार पीठाधीश्वर वैदेही वल्लभादेवाचार्य श्री भीड़ भंजन बालाजी, मसूरिया पहाड़ी, जोधपुर (प्रदेश अध्यक्ष, अ.भा.संत समिति)
7. भारत गौरव राष्ट्र संत पूज्य आचार्य श्री पुलकसागर जी–जैन संत
8. पू. स्वामीश्री ओमदासजी महाराज, पीठाधीश्वर, सांगलिया धूणी, सीकर
9. पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज, पीठाधीश्वर श्री प्रेमप्रकाश मण्डल (अमरापुर धाम)जयपुर
10. पू.श्री शंभुनाथजी शैलानी महाराज, चंचल प्रागमठ, बाड़मेर
11. आचार्य पीठ श्रीश्री 1008 सिंह स्थल पीठाधीश्वर पूज्य महन्त श्री क्षमारामजी महाराज, रामस्नेही रामधाम (रामद्वारा)- सींथल, बीकानेर
12. मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य पूज्य स्वामी रामानन्द जी महाराज- मुक्तिधाम मुकाम नोखा, बीकानेर
13. ब्रह्मसिद्ध सावित्री पीठाधीश्वर पूज्य संत तुलछाराम जी महाराज–ब्रह्मधाम, आसोतरा, बाड़मेर
14. पू. स्वामी ब्रह्मदेवजी, श्री जगदम्बा अंध,मूक एवं बधिर विद्यालय, श्रीगंगानगर
15. पू. महन्त योगी सूरजनाथजी महाराज, आसन पांचलासिद्धा, नागौर
16. पूज्या साध्वी प्रीति प्रियंवदाजी, संस्थापक श्री ललिता आश्रम, जयपुर
17. पू.गोस्वामी अच्युतानन्दजी महाराज,पीठाधीश्वर वेणेश्वर धाम, डूंगरपुर
18. पूज्य झंकारेश्वर जी महाराज– पीपानन्द धाम, झालावाड़
19. पू.महन्त परशुराम गिरीजी महाराज, श्रीमठ कनाना, बाड़मेर
20. श्रीश्री 1008 पूज्य महन्त गंगानाथ जी महाराज– जलन्धर अखाड़ा, सिरे मंदिर, जालौर
21. पूज्य स्वामी प्रतापपुरी जी– महन्त तारातरा मठ, बाड़मेर
22. श्रीश्री108 परमपूज्य महामंडलेश्वर अर्जुनदास जी महाराज–पीठाधीश्वर श्री दादू द्वारा बगड़,झुंझुनू(केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल, विहिप)
23. योगी श्री चेतननाथ जी महाराज– श्री सिद्धेश्वर महादेव आश्रम, मुकुंदगढ़ मंडी, जि.झुंझुनू
24. पूज्य संत श्री अमोलक सिंह जी, प्रमुख राधास्वामी धाम, चक9जीबी, जैतसर, श्रीगंगानगर

श्रीराम मंदिर निधि समर्पण समिति, राजस्थान

अध्यक्ष श्री ताराचंद गोयल- प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी, कोटा
उपाध्यक्ष राजमाता पद्मिनी देवी- चेयरपर्सन एवं ट्रस्टी, महाराज सवाईमानसिंह द्वि. म्यूजियम ट्रस्ट, सिटी पैलेस, जयपुर
उपाध्यक्ष महारानी दिव्या कुमारी- समाजसेवी एवं पूर्व सांसद, भरतपुर
उपाध्यक्ष श्री नरसी कुलरिया सुथार- को चेयरमैन ऑफ फर्नीचर एण्ड फिटिंग स्किल काउंसिल इण्डिया, नोखा (बीकानेर)
उपाध्यक्ष श्री एम.एल. स्वर्णकार- शिक्षाविद एवं चिकित्सक, एम.जी. हॉस्पीटल,जयपुर
उपाध्यक्ष श्री ज्योति कुमार माहेश्वरी- प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी, जयपुर
उपाध्यक्ष श्री रूपचंददास संत साहेब- गादीपति कबीर पंथ वाल्मिकी समाज, जोधपुर (से.नि. तकनीकी अधिकारी, काजरी संस्थान, जोधपुर)
उपाध्यक्ष रामचंद्र खराड़ी-अध्यक्ष,अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम (से.नि.अति. जि.कलेक्टर)
उपाध्यक्ष श्री नवरतनमल कोठारी- प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी, जयपुर
मंत्री श्री सुरेश उपाध्याय- प्रदेश मंत्री,वि.हि.प. जयपुर प्रांत
सह मंत्री श्री गेंदालाल सैनी- सह अभियान प्रमुख, जयपुर प्रांत
सह मंत्री श्री कौशल गौड़- अभियान प्रमुख, चित्तौड़ प्रांत
सह मंत्री श्री महेन्द्र सिंह राजपुरोहित- अभियान प्रमुख, जोधपुर प्रांत
कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश जीरावला- उद्योगपति, जोधपुर
सदस्य श्री एस.के.पोद्दार- प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी, जयपुर
सदस्य श्री दामोदरदास मोदी- संरक्षक, वि.हि.प., जयपुर प्रांत
सदस्य श्री रमेशचंद्र अग्रवाल- प्रसिद्ध चिकित्सक एवं क्षेत्र संघचालक, जयपुर
सदस्य श्री अरविंद सिंहल- उद्योगपति एवं समाजसेवी, उदयपुर
सदस्य श्री रमेशचंद्र मूथा- अध्यक्ष, नाकोड़ा ट्रस्ट, बाड़मेर
सदस्य श्री गोविन्द माहेश्वरी- एलन (ALLEN) इंस्टीट्यूट, कोटा
सदस्य श्री घनश्याम ओझा- अध्यक्ष, लघु उद्योग भारती, जोधपुर
सदस्य श्री निर्मल गहलोत- सी.ई.ओ. उत्कर्ष एवं फाउण्डर, उत्कर्ष क्लासेज एण्ड एज्युटेक प्रा.लि., जोधपुर
सदस्य सरदार श्री अजयपाल सिंह- अध्यक्ष सिख समाज, राजस्थान
सदस्य श्री सुरजाराम मील- प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं समाजसेवी, जयपुर
सदस्य श्री महेन्द्र डेरेवाला- प्रमुख व्यवसायी एवं समाजसेवी, जयपुर
सदस्य श्री जुगल किशोर बिड़ला- उद्योगपति एवं समाजसेवी, चित्तौड़
सदस्य श्री बजरंगलाल बागड़ा- केन्द्रीय मंत्री, वि.हि.प., राष्ट्रीय अध्यक्ष, एकल अभियान
सदस्य श्री यादराम मीणा- से.नि. न्यायाधीश उच्च न्यायालय, जयपुर
सदस्य डॉ. राम गोयल- अध्यक्ष, वि.हि.प., जोधपुर प्रांत
सदस्य श्रीमती श्यामला वर्डिया- प्रमोटर डायरेक्टर, वर्डिया होटल्स प्रा. लि. प्रोपराईटर ऑफ द बेजेवेल्ड होर्स(ए मार्बल आर्टफेक्ट यूनिट), उदयपुर
सदस्य श्री सुरज्ञानसिंह गुर्जर- अध्यक्ष, श्री देवनारायण मं. ट्रस्ट जोधपुरिया निवाई, टोंक
सदस्य श्री कन्हैयालाल बेरवाल- पूर्व निदेशक, अम्बेडकर पीठ, जयपुर
सदस्य श्री रमेश जी (मुल्तानी) जैन- जवाहरात व्यवसायी, जयपुर
सदस्य श्री प्यारेलाल मीणा- अध्यक्ष वि.हि.प. जयपुर प्रांत, दौसा
सदस्य श्री महेन्द्रसिंह राव- पूर्व अध्यक्ष, वंशावली संरक्षण आयोग, जयपुर
सदस्य श्री अशोक कोठारी- उद्योगपति, भीलवाड़ा
सदस्य श्री एस. डी. शर्मा- पूर्व अध्यक्ष देवस्थान विभाग, जयपुर
सदस्य श्री ताराचंद जाटोल- से.नि. मुख्य अभियन्ता, बाड़मेर
सदस्य श्री बी.आर. छीपा- शिक्षाविद् (पूर्व कुलपति), अजमेर

पुरखों ने तो शीश चढ़ाये

✍ **बलवीर सिंह करुण**, अलवर

सत्तर से भी ज्यादा अपने
पुरखों ने है समर लड़े
जिसकी रक्षा में भक्तों के
लाखों जीवन सुमन चढ़े।

सदियों से शत कोटि मनों में
जिसकी पलती चाह रही
अब आकर उस देवालय के
निर्माणों की राह खुली।

कई पीढ़ियों ने प्राणों की
आहुतियाँ दी हँस-हँस कर
राखी, चूड़ी और बिन्दियाँ
कितनी वारी बढ़-चढ़ कर ।

बलिदानों के उन हवनों का
फल अब सबके सम्मुख है
पूर्णाहुति के मन्त्र बोलने
का अब अवसर प्रस्तुत है।

यथाशक्ति हम करें आकलन
अपनी नेक कमाई का
आवाहन कर रही अयोध्या
बहनों का हर भाई का।

भव्य राम मन्दिर हम सबके
पावन धन से निर्मित हो
सारी दुनिया जिसे देखकर
आनन्दित हो विस्मित हो।

यह दुर्लभ अवसर न हाथ से
जाने पाये ध्यान रहे
आँखों के सम्मुख पुरखों के
वे लाखों बलिदान रहें।

रामलला के आँगन में तो
राजा रंक बराबर हैं
उनके श्री चरणों में अर्पित
ताँबा स्वर्ण बराबर हैं।

तो भी रामकाज की खातिर
अधिकाधिक ही अर्पण हो
पुरखों ने तो शीश चढ़ाये
अब अपना धन अर्पण हो।।

श्रीराम मंदिर निर्माण हेतु जागरण जुलूस पर पथराव

अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए हिन्दू समाज के प्रत्येक घर से सम्पर्क करने तथा सहयोग लेने हेतु जनजागरण करने के लिए मध्य प्रदेश के इन्दौर में निकाले जा रहे जुलूस पर मुस्लिम समुदाय के कतिपय लोगों द्वारा पथराव करने की घटना सामने आयी है।

गौरतलब है कि देश के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा राममंदिर निर्माण संबंधी निर्णय के बाद देश में एक सद्भाव का वातावरण बना हुआ था। सभी पक्षों ने न्यायालय निर्णय को स्वीकार किया था। प्रधानमंत्री मोदी तथा हिंदू एवं मुस्लिम समाज के धर्मगुरुओं के निवेदन पर देशभर में शांति का माहौल था। परन्तु कुछ कट्टर पंथी इस सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में विष घोलना चाह रहे हैं।

इन्दौर में श्रीराम मंदिर के लिए **रैली जब एक मस्जिद के पास से होकर निकल रही थी, उसी दौरान मुस्लिम समुदाय के कुछ लोगों ने रामभक्तों पर पथराव किया। उस समय रामभक्त हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए चल रहे थे। पथराव में 12 लोग घायल हुए बताये गये।** घायल युवक भैरु चौधरी ने बताया कि पथराव करने वालों की संख्या 200 से अधिक थी।

उज्जैन में भी हुआ था पथराव

इससे पहले 25 दिसम्बर, 2020 को उज्जैन के बेगमबाग में भी श्रीराम मंदिर रैली पर पथराव हो गया था। इन्दौर के डीआईजी हरिनारायणचारी मिश्रा के अनुसार पथराव करने वालों की पहचान की जा रही है। उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं।

पत्थरबाजी सामान्य अपराध नहीं है। ये समाज के दुश्मन हैं। ऐसे मामलों में सजा के लिए कड़ा कानून बना रहे हैं। उपद्रवी की सम्पत्ति जप्त की जाएगी।

पत्थरबाजों को छोड़ा नहीं जाएगा – शिवराज सिंह

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री ने श्रीराम मंदिर निर्माण जुलूस पर पथराव की घटनाओं पर बयान दिया है कि पथराव करने वाले उपद्रवियों को छोड़ा नहीं जाएगा। श्री शिवराज सिंह ने कहा कि पत्थरबाजों को लेकर राज्य सरकार सख्त है। पत्थरबाजी सामान्य अपराध नहीं है। ये समाज के दुश्मन हैं और ऐसे लोगों को छोड़ा नहीं जाएगा।

पत्थरबाजों को सजा व उनकी सम्पत्ति जप्त होगी– श्री चौहान गत 3 जनवरी को मीडिया से बात कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में सजा के लिए कड़ा कानून बना रहे हैं। सजा के साथ ही ऐसे उपद्रवी लोगों को पीड़ित व्यक्ति को क्षतिपूर्ति भी देनी होगी साथ ही उपद्रवी की सम्पत्ति भी जप्त की जाएगी।

मैं बहुत चिंतित हूँ ... जिस दिन राम मंदिर का फैसला आया था, हमने अपने कार्यकर्ताओं से कहा था...विजय जुलूस मत निकालो, पटाखे मत फोड़ो। यह किसी की पराजय नहीं हुई, यह सत्य की विजय हुई है... देश में एक भी घटना नहीं हुई, तब से अब तक नहीं हुई ... तो अब क्यों हो ... हमने अपने कार्यकर्ताओं को सावधान रहने के लिए कहा है, हमने प्रशासन को भी सतर्क रहने के लिए कहा है।

– एडवोकेट आलोक कुमार, कार्याध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

अप्रतिम योद्धा एवं महानायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारत को आजाद कराने के लिये किये गये प्रयत्नों में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का नाम अग्रणी है। अंग्रेजों द्वारा की गई नजरबंदी के दौरान पुलिस को चकमा देकर (वीर शिवाजी की तरह ही) बाहर निकलने तथा पठान के वेश में अफगानिस्तान व मास्को होते हुए जर्मनी पहुँचने की उनकी कहानी हिम्मत और रोमांच से भरी है।

उन्होंने आजाद हिन्द फौज का गठन किया, सरकार बनायी और जापान से मिलकर अंग्रेजों से युद्ध लड़कर भारत को स्वतंत्र कराने का प्रयत्न किया। नेताजी ने कहा, ' तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।'

यद्यपि द्वितीय विश्वयुद्ध की बदली हुई परिस्थितियों के कारण नेताजी को सफलता नहीं मिली, परन्तु उनके द्वारा भारत की आजादी के लिये किये गये प्रयासों के कारण वे जन-जन के नायक बन गए।

एक विचित्र सत्य है कि जहां स्वतंत्रता से पूर्व विदेशी शासक नेताजी के सामर्थ्य से घबराते रहे, स्वतंत्रता के पश्चात् देशी शासक जनमानस पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रभाव से घबराते रहे।

यह वर्ष सुभाष बाबू की जयंती का 125वां वर्ष है। देशभर में इस दौरान अनेक कार्यक्रम होंगे।

1947 से भी 4 वर्ष पहले स्वतंत्र करा लिए गए थे भारत के भू भाग – नेताजी ने फहराया था तिरंगा

देश के कितने लोगों को जानकारी है कि 1947 में मिली आजादी से भी 4 साल पहले भारत की धरती के एक हिस्से को स्वतंत्र कराकर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने वहाँ पोर्टब्लेयर में तिरंगा झण्डा फहराया था। यह हुआ था 30 दिसम्बर,1943 को। यह पहला भारतीय भू-भाग था जो ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ था। गांधी जी द्वारा 1942 में प्रारम्भ 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन का दमन कर दिया गया था। गांधी, नेहरू, पटेल सहित कांग्रेस के हजारों नेता-कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए थे। देश में आजादी को लेकर एक प्रकार की निराशा थी।

सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द फौज का गठन कर अंग्रेजों पर हमला कर दिया था। द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। अंडमान-निकोबार द्वीप में अंग्रेजों की हार हुई। द्वीप पर नेताजी की आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो गया। **30 दिसम्बर,1943 को नेताजी ने अंग्रेजों से स्वतंत्र करा लिए गए इस द्वीप पर भारत के प्रधानमंत्री की हैसियत से तिरंगा झण्डा फहराया।** यह भारत की भूमि पर स्वतंत्रता का पहला समारोह था।

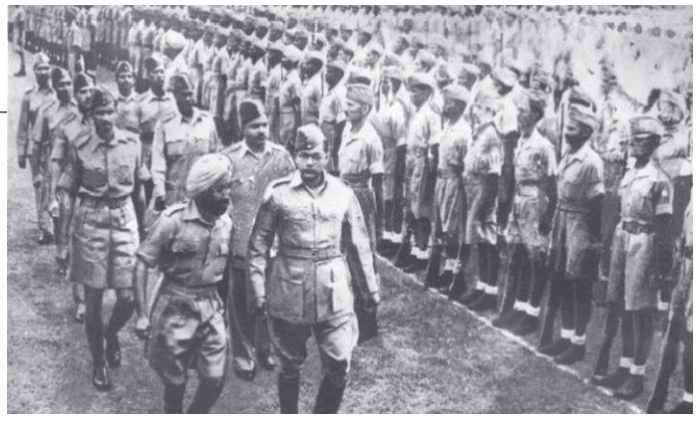

परेड का निरीक्षण करते नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

वर्ष भर समारोह के लिए समिति गठित

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की 125वीं जयंती वर्ष समारोह की रूपरेखा तैयार करने के लिए केन्द्र सरकार ने गृहमंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति गठित की है। इस समिति में इतिहासकारों, बोस के परिवारजनों तथा आजाद हिंद फौज से जुड़े प्रमुख लोगों को शामिल किया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार इस वर्ष 23 जनवरी से जयंती समारोह के कार्यक्रम प्रारम्भ होकर पूरे साल चलेंगे। समारोह दिल्ली, कोलकाता तथा देश-विदेश के उन स्थानों पर आयोजित होंगे जो नेताजी एवं आजाद हिन्द फौज से संबंधित हैं।

केन्द्र की मोदी सरकार ने पहले ही नेताजी से जुड़े गोपनीय दस्तावेज सार्वजनिक कर दिए हैं। दिल्ली के लाल किले में उनके जीवन पर एक म्यूजियम की स्थापना भी हो चुकी है।

प. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी नेताजी की जयंती को **'देशनायक दिवस'** के रूप में मनाने की घोषणा की है।

देश का प्रथम प्रधानमंत्री किसे मानेंगे ?

यह सच है कि 1947 में अंग्रेजों ने भारत को स्वतंत्र करने की घोषणा की तथा जवाहर लाल नेहरू ने भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। परन्तु, यह भी उतना ही सच है कि **21 अक्तूबर, 1943 को स्वतंत्र भारत की एक सरकार का गठन हुआ था जिसके प्रधानमंत्री बने थे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस। इस सरकार को 7 देशों (जर्मनी, जापान, फिलीपीन्स, कोरिया, इटली, मान्चुको और आयरलैण्ड) द्वारा मान्यता भी दी गई थी।**

इस सरकार की अपनी सेना थी जिसमें उस समय लगभग 85 हजार सैनिक थे तथा एक महिला यूनिट थी जिसकी कप्तान लक्ष्मी स्वामीनाथन थी। आजाद हिंद सरकार का अपना बैंक था। इस बैंक ने दस रुपये के सिक्के से लेकर **एक लाख** रुपये तक के नोट जारी किये थे। सरकार के डाक टिकट थे और झण्डा था– तिरंगा। एक–दूसरे से अभिवादन के लिए 'जय हिंद' कहा जाता था।

इस सरकार में वित्त मंत्री एस.सी. चटर्जी सहित 16 मंत्री बनाये गये थे। नेताजी ने आजाद हिंद सरकार की सेना को 5 जुलाई, 1943 को सिंगापुर में सम्बोधित करते हुए नारा दिया– 'दिल्ली चलो।' नेताजी की सेना ने जापानी सेना के साथ मिलकर ब्रिटिश एवं कॉमनवेल्थ सेना से युद्ध किया। 4 फरवरी, 1944 को आजाद हिन्द सेना ने कोहिमा, पलेल आदि कुछ भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया था।

अंडमान–निकोबार के द्वीप का नाम नेताजी पर रखा

30 दिसम्बर, 1943 को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के अंडमान–निकोबार में तिरंगा फहराने की 75वीं वर्षगांठ पर प्र.म.नरेन्द्र मोदी 2018 की 30 दिसम्बर को वहां गये थे। उस अवसर पर उन्होंने आजाद हिन्द फौज की टोपी पहनकर 'नेताजी स्टेडियम' में आयोजित जनसभा में कहा था, *'जब भी स्वतंत्रता सेनानियों की बात होती है, तो नेताजी का नाम बहुत गर्व से लिया जाता है। नेताजी सुभाष बोस ने अंडमान की धरती पर ही भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में भारत की स्वतंत्रता का संकल्प लिया था।'*

उक्त अवसर पर श्री नरेन्द्र मोदी ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह के तीन द्वीपों को नया नाम दिया। **'रोस आइलैण्ड'** द्वीप का नाम **'नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वीप', 'नील आइलैण्ड'** को **'शहीद द्वीप '** तथा **'हैवलाक आइलैण्ड'** को **'स्वराज द्वीप'** का नाम देने की घोषणा की गई। उल्लेखनीय है कि स्वयं नेताजी ने अंडमान–निकोबार का नाम बदलकर शहीद और स्वराज द्वीप करने की घोषणा की थी, जिसे 75 वर्षों पश्चात् प्र.म.मोदी ने साकार किया।

पोर्टब्लेयर में जहां नेताजी ने तिरंगा फहराया था, वहीं श्री नरेन्द्र मोदी ने 150 फीट ऊँचा राष्ट्रीय ध्वज फहराया। नेताजी द्वारा तिरंगा फहराने की स्मृति में एक स्मारक डाक टिकट तथा 75 रुपये का सिक्का भी जारी किया गया । प्रधानमंत्री ने सेल्युलर जेल भी देखी तथा शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

नेताजी के तिरंगा फहराने की स्मृति में जारी सिक्का तथा डाक टिकट

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ट्वीट

Narendra Modi
@narendramodi

''नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की वीरता सर्वविदित है। नेताजी जैसे विद्धान, फौजी एवं राजनीतिज्ञ की 125वीं जयंती से जुड़े कार्यक्रमों की घोषणा हम जल्द करेंगे। आइए, इस अवसर को भव्य तरीके से मनाया जाए।''

नेपाल से सटी भारतीय सीमा में बड़ी संख्या में बन रहे हैं मस्जिद व मदरसे

प्राप्त जानकारी के अनुसार बिहार के रौताहट, परेसा, कपिलवस्तु, सुनतारी और बारा जिलों में तथा उत्तर प्रदेश के कुशीनगर, महराजगंज, बहराइच, बलरामपुर, श्रावस्ती जिलों के नेपाल से सटे क्षेत्र में बड़ी संख्या में मस्जिद तथा मदरसे बन जाने से सुरक्षा एजेन्सियों के बीच हड़कंप मचा हुआ है। बताया जा रहा है कि जितने मदरसे खुले हैं उतनी संख्या में तो विद्यार्थी भी नहीं हैं।

सूत्रों के अनुसार बिहार की सीमा पर एक- दो मंजिला गेस्ट हाउस पाकिस्तान के 'दावत-ए-इस्लामिया' (DeI) की फंडिंग से बना है। यह पाकिस्तान का एक जिहादी संगठन है। इस संगठन के मेहमानों को उक्त गेस्ट हाउस में ठहराया जाता है।

पाकिस्तान, बांग्लादेश के लोग भी वहाँ ठहरते हैं। नेपाल की तरफ भी भारतीय सीमा पर मदरसे तथा मस्जिदें बनायी गयी हैं। इसके कारण बड़ी आशंका घुसपैठ तथा आतंकवादी गतिविधियों की बनी हुई है।

नेपाल की 'समाज कल्याण परिषद' के अनुसार भारत से लगे नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में मदरसों को कतर, सऊदी अरब और तुर्की जैसे देशों से धन मिल रहा है। कल्याण परिषद के सचिव राजेन्द्र कुमार पौडेल ने माना है कि '' भारत ने इसे लेकर चिंता जाहिर की है।''

भारतीय सुरक्षा एजेन्सियों द्वारा तैयार रिपोर्ट में कहा गया है कि सीमावर्ती जिलों में इन मदरसों तथा मस्जिदों को विदेशी फंडिंग प्राप्त हो रही है तथा ये भारत विरोधी गतिविधियों के केन्द्र बने हुए हैं।

सुरक्षा एजेन्सियों ने उत्तर प्रदेश की नेपाल से लगती सीमा पर 257 मस्जिदों व मदरसों की सूची तैयार की है, जिनमें टेरर-फंडिंग का शक है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस संबंध में जांच के आदेश जारी किए हैं। खुफिया विभाग भी इन पर नजर रखे हुए है।

एक जानकारी के अनुसार दिल्ली दंगों की साजिश में शामिल पीएफआई भी अपने नेटवर्क के प्रचार-प्रसार में इन धार्मिक स्थलों का उपयोग कर रहा है।

सेना के रिटायर्ड मेजर जनरल एसपी सिन्हा कहते हैं, ''भारत नेपाल की खुली सीमा का रेडिकल जिहादी गुट हमेशा से ही फायदा उठाने की फिराक में रहते हैं तथा इन गुटों के माध्यम से मस्जिद-मदरसों की फंडिंग की जाती है, जो कि चिंता का विषय है।''

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी- 1.(क) 2.(ख) 3.(ग) 4.(क) 5.(घ) 6.(क) 7.(ख) 8.(ख) 9.(ग) 10.(घ)

पाकिस्तान में फिर तोड़ा गया एक और मंदिर

गत 30 दिसम्बर, 2020 को जमायत-उलेमा-ए-इस्लाम के एक नेता के साथ 100 से ज्यादा लोगों की उन्मादी भीड़ ने पाकिस्तान में एक और मंदिर को तोड़ दिया तथा मंदिर में आग लगा दी। यह मंदिर पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के करक जिले में स्थित है।

भारत की ओर से जोरदार विरोध दर्ज कराया गया। खबर है कि भारत ने कूटनीतिक माध्यमों से भी पाकिस्तान पर कार्रवाई का दबाव बनाया। शायद इसीलिए पाकिस्तान सरकार ने कुछ गिरफ्तारियां की हैं तथा मंदिर पुनर्निर्माण के आदेश दिये हैं। देखना यह है कि गिरफ्तार लोगों में से कितनों को सजा होती है।

पाकिस्तान में मंदिर तोड़ने का सिलसिला 1947 में पाकिस्तान निर्माण के साथ ही शुरु हो गया था। तब पाकिस्तान में सैकड़ों मंदिर थे। अब गिने चुने ही रह गये हैं, जहां पूजा-अर्चना होती हो। एक सर्वे के अनुसार 408 मंदिरों में दुकानें, रेस्टोरेन्ट, होटल, दफ्तर या मदरसे चलाये जा रहे हैं।

जहां आजादी के पश्चात् भारत में हजारों मस्जिदों का निर्माण हुआ है, वहीं पाकिस्तान में सैकड़ों मंदिर तोड़े गये। पिछले 73 बरसों में पाकिस्तान में मात्र दो मंदिरों का निर्माण हुआ है, जिन्हें वर्ष 2000 के बाद इस्कॉन (इंटरनेशनल

→

असम में सरकारी मदरसे बंद कराये गये

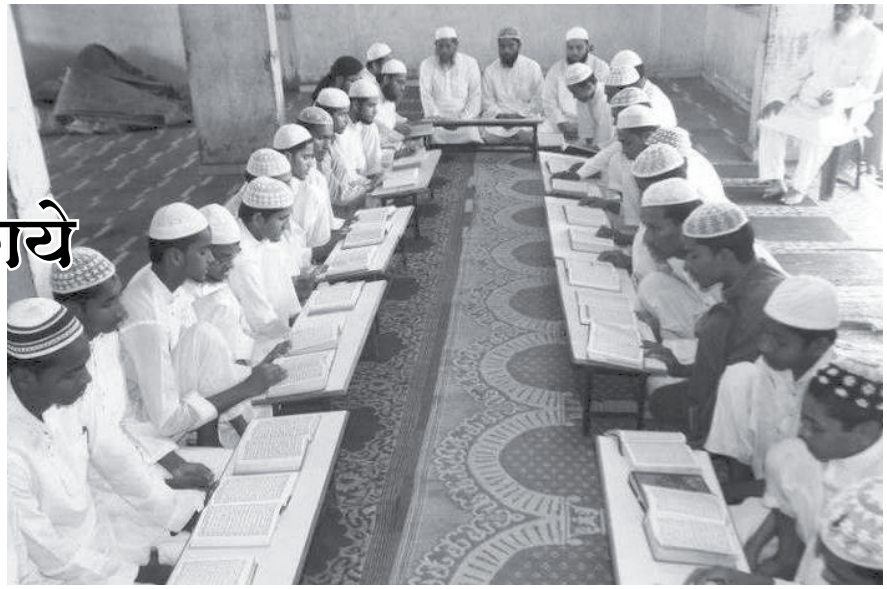

असम के शिक्षा मंत्री का कहना है कि राज्य के पैसे से हम कुरान नहीं पढ़ा सकते। अगर हमें सरकारी खर्च पर कुरान ही पढ़ानी है तो फिर गीता और बाइबल क्यों नहीं पढ़ानी चाहिए?

असम राज्य में सभी सरकारी मदरसों को बंद करने के प्रस्ताव को विधान सभा में गत दिनों मंजूरी दे दी गई। राज्य के शिक्षा मंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने यह विधेयक पेश किया जिसके तहत सभी मदरसों को सामान्य शिक्षा संस्थानों में बदल दिया जायेगा और भविष्य में सरकार द्वारा कोई भी मदरसा राज्य में स्थापित नहीं किया जायेगा।

ज्ञात हो कि असम में वर्तमान में 610 सरकारी मदरसे हैं और सरकार प्रतिवर्ष इन मदरसों पर करोड़ों रुपये खर्च करती है। इस विधेयक के आने के बाद 'राज्य मदरसा बोर्ड, असम' को भंग कर दिया जायेगा।

मदरसों में पढ़ने वालों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा मिले इसके लिए उन्हें स्कूलों में तब्दील कर दिया जायेगा ताकि बच्चों को विज्ञान, गणित, सामाजिक ज्ञान, अंग्रेजी, हिन्दी आदि की शिक्षा दी जा सके।

असम के शिक्षा मंत्री का कहना है कि राज्य के पैसे से हम कुरान नहीं पढ़ा सकते। अगर हमें सरकारी खर्च पर कुरान ही पढ़ानी है तो फिर गीता और बाइबल क्यों नहीं पढ़ानी चाहिए? हमें सभी धर्मों के साथ समान नीति अपनानी होगी।

प्रश्न यह भी है कि शिक्षा का मजहबी बँटवारा क्यों? मजहबवाद पहले कट्टरवाद और अंत में आतंकवाद में तब्दील होता है। आने वाले समय में उनके हाथों में एके-47 नहीं कम्प्यूटर होना चाहिए। उनका स्किल डवलपमेंट होना चाहिए ना कि इस्लामिक कट्टरवाद की मानसिकता से ओत-प्रोत जीवन।

असम सरकार के इस फैसले का स्वागत किया जाना चाहिए और देश के अन्य राज्यों को भी इस ओर अपने कदम बढ़ाने चाहिए।

राजस्थान सरकार ने मदरसों को दिए 5.38 करोड़

असम सरकार के उलट राजस्थान सरकार 36 मदरसों का ढांचा मजबूत करने के लिए 5.38 करोड़ रुपये देने जा रही है। अल्पसंख्यक मामलात मंत्री शाले मोहम्मद ने इसे नव वर्ष पर प्रदेशवासियों को सौगात बताते हुए कहा कि उक्त राशि क्लासरूम, रसोई घर, हॉल आदि के निर्माण पर खर्च होगी। बता दें कि प्रदेश में 3,250 पंजीकृत मदरसे हैं, जिनमें 6 हजार के करीब पैराटीचर्स कार्यरत हैं।

→ सोसायटी फॉर कृष्णा कांशसनेस) ने अपने न्यूयार्क एवं ब्रिटेन के संपर्कों के माध्यम से पाक सरकार पर दबाव बनाकर बनाये हैं। हालांकि पाकिस्तान जैसे देश में नए मंदिर बनना ही अपने आप में काफी आश्चर्यजनक है। इन मंदिरों के लिए स्वीकृति देने के पीछे एक बड़ा कारण पाकिस्तान सरकार द्वारा विश्व को यह संदेश देने का प्रयास है कि वहां अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव नहीं होता, जो कि सरासर झूठ है।

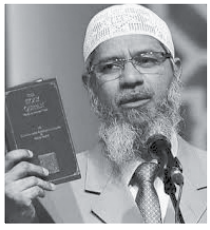

जाकिर नाईक ने किया समर्थन

भारत से भाग कर मलेशिया चले गये भगोड़े इस्लामिक धर्मगुरु जाकिर नाईक ने पाकिस्तान के पख्तूनख्वा प्रांत में मंदिर तोड़े जाने का समर्थन किया है। नाईक ने कहा है कि इस्लामिक देश में मंदिर नहीं होने चाहिए। अगर इस्लामिक देश में कोई मंदिर है, तो उसे भी तोड़ देना चाहिए।

बता दें कि कांग्रेसी नेता दिग्विजय सिंह जाकिर नाईक को शांति दूत बुलाते रहे हैं। दिग्विजय सिंह मुंबई में नाईक के मंच से एक सम्मेलन को भी सम्बोधित कर चुके हैं।

जर्मनी में उजागर हुई चर्च की असलियत

बिशप, पादरी, ननों द्वारा बच्चों का यौन शोषण

आमतौर पर दुनियाभर के चर्च मानव सेवा, शांति और शिक्षा का दम भरते नजर आते हैं, लेकिन सच्चाई कुछ और ही है। यह बात अलग है कि चर्च के पादरियों द्वारा वहाँ रहने वाली ननों के साथ जो दुर्व्यवहार होता है वह जल्दी से सबके सामने नहीं आता है। लेकिन अब चर्च की असलियत पूरी दुनिया के सामने आने लगी है।

ऐसा ही एक मामला पिछले दिनों जर्मनी के डार्मस्टैड में सोशल वेलफेयर कोर्ट में आया, जहाँ कोर्ट के आदेश पर 63 साल के एक व्यक्ति को यौन उत्पीड़न के केस में मुआवजा मिला। पीड़ित व्यक्ति से 5 वर्ष की उम्र में जर्मनी के शहर स्पिनर में 'ऑडर्स ऑफ सिस्टर्स' द्वारा चलाये जा रहे 'द डिवाइन सेवियर होम' (बच्चों का हॉस्टल) में रहने के दौरान कई बार यौनाचार हुआ था। उन्होंने बताया कि पहली बार उन्हें स्पिनर के बिशप रुडोल्फ मोत्जेनबैकर के पास उसके अपार्टमेंट में भेजा गया, उसके बाद यह सिलसिला चल पड़ा। विरोध करने पर उसे मारा-पीटा भी जाता था। इतना ही नहीं इस काम के लिए बच्चों को तैयार करने के लिए ननों को पैसा मिलता था, साथ ही वे भी बच्चों का शोषण करती थीं। पीड़ित ने अपनी गवाही में अदालत से यह भी कहा कि,

> **'वहाँ एक कमरा था, जहाँ नन पुरुषों को शराब और खाना परोसती थी और दूसरे कोने में बच्चों के साथ दुष्कर्म किया जाता था।' चर्च की ननें एक प्रकार से दलाल की तरह काम करती थीं।**

वे 7 से 14 वर्ष के बच्चों को चर्च के पादरी, चर्च के सदस्य तथा उनके मिलने वाले बड़े-बड़े लोगों के पास भी भेजा करती थीं। इसी चिल्ड्रन होम में काम करने वाली एक नन पर बच्चों की तस्करी के आरोप भी लगे हैं।

उक्त केस में स्थानीय कोर्ट के आदेश पर चर्च ने 25 हजार यूरो (लगभग 22 लाख रुपये) मुआवजे में दिये। इसके बाद ऐसे तीन मामले और भी सामने आये हैं।

आपको बता दें कि इस तरह के आरोप विश्व के कई पादरियों पर पहले भी लग चुके हैं। वर्ष 2012 में इटली में एक कैथोलिक पादरी रिकाडरे सोपिया को नाबालिगों के साथ यौन अपराध के मामले में 9 साल और सात महीने की कैद तथा 28 हजार यूरो का जुर्माना लगाया था।

पादरी और नन को आजीवन कारावास

केरल के तिरुवनंतपुरम की सीबीआई अदालत ने 1992 में हुई 19 वर्षीय सिस्टर अभया उर्फ बीना थॉमस की हत्या के मामले में मुख्य आरोपी पादरी थॉमस कुट्टूर और उसकी सहयोगी नन सेफी को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि सिस्टर अभया का शव 27 मार्च,1992 को कोट्टायम के सेंट पायस कॉन्वेंट परिसर के कुंए में मिला था। सिस्टर अभया उस दिन पढ़ाई के लिए सुबह जल्दी उठी और पानी लेने जब रसोई की ओर जा रही थी तो उसने दो पादरियों और एक नन को आपत्तिजनक स्थिति में देखा। मामले को दबाने के लिए तीनों लोगों ने मिलकर सिस्टर पर जानलेवा हमला करते हुए उसे जिंदा ही कुँए में फेंक दिया,जहाँ डूबने से उसकी मृत्यु हो गई थी।

चर्च के दवाब में केरल पुलिस और क्राइम ब्रांच ने उक्त मामले को आत्महत्या बताते हुए बंद कर दिया था। लेकिन अभया के गरीब माता-पिता ने न्याय के लिए लम्बी लड़ाई जारी रखी।

देर से ही सही फैसला आने के बाद सिस्टर अभया के भाई ने कहा,'' भगवान महान है। मेरी बहन के साथ न्याय हुआ है।''

अदालत का निर्णय चर्च के अधिकारियों के मुँह पर करारा तमाचा है, जिन्होंने बेशर्मी से हत्यारों का बचाव किया।

मुख्य आरोपी पादरी तथा नन

सिस्टर अभया

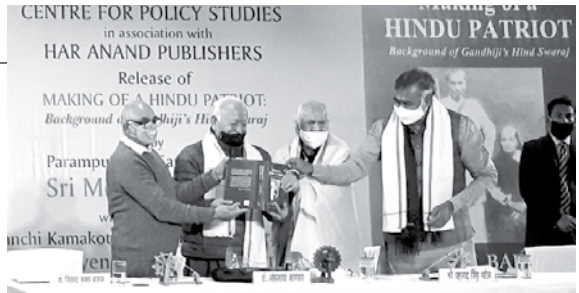

पुस्तक का विमोचन करते सरसंघचालक डॉ.मोहन भागवत एवं मंचासीन अतिथि

अगर हिन्दू है तो उसे देशभक्त होना ही पड़ेगा : भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा है कि– 'अगर कोई हिंदू है तब वह देशभक्त होगा और यह उसका बुनियादी चरित्र एवं प्रकृति है। सरसंघचालक जी ने महात्मा गाँधी की उस टिप्पणी को उद्धृत करते हुये यह बात कही जिसमें उन्होंने कहा था कि उनकी देशभक्ति की उत्पत्ति उनके धर्म से हुई है।

श्री भागवत ने गत 25 दिसम्बर को दिल्ली में राजघाट स्थित सत्याग्रह मण्डप में जे.के.बजाज और एम.डी. श्रीनिवास द्वारा लिखित पुस्तक 'मेकिंग ऑफ ए हिंदू पैट्रियट : बैकग्राउंड ऑफ गाँधी जी हिंद स्वराज्य' के विमोचन कार्यक्रम के दौरान उक्त उद्गार प्रकट किये। पुस्तक में महात्मा गाँधी के पोरबंदर से इंग्लैण्ड और फिर दक्षिण अफ्रीका की यात्रा व जीवन का उल्लेख किया गया है।

उन्होंने कहा कि किताब के नाम और मेरे द्वारा विमोचन को लेकर यह अटकलें जरूर लग सकती हैं कि यह गाँधी जी को अपने हिसाब से परिभाषित करने की कोशिश है। लेकिन महापुरूषों को कोई अपने हिसाब से परिभाषित नहीं कर सकता। किताब महात्मा गाँधी के जीवन पर प्रमाणिक व व्यापक शोध पर आधारित है और जिसका इससे भिन्न मत है– वह भी शोध करके लिख सकते हैं।

सरसंघचालक जी ने स्वधर्म और देशभक्ति का जिक्र करते हुये कहा कि, **'हिंदू है तो उसे देशभक्त होना ही होगा,क्योंकि उसके मूल स्वभाव में यह है। वह सोया हो सकता है जिसे जगाना होगा, लेकिन कोई हिंदू भारत विरोधी नहीं हो सकता।'**

भागवत जी ने कहा कि भिन्न होने का मतलब यह नहीं है कि हम एक समाज, एक धरती के पुत्र बनकर नहीं रह सकते। एकता में अनेकता और अनेकता में एकता यही भारत की मूल सोच है।

भारत विकास परिषद ने मनाया गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस

गत 20 दिसम्बर को भारत विकास परिषद की जयपुर महानगर शाखा ने गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस वेबिनार के माध्यम से मनाया। कार्यक्रम में गुरु के जीवन तथा गुरु परम्परा के गौरवशाली इतिहास से जुड़े प्रसंगों का विस्तार से वर्णन श्री एस.के.वाधवा ने किया। एक दिन पूर्व महानगर शाखा द्वारा श्रीराम जानकी विवाहोत्सव का भी आयोजन किया गया।

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय का 'संविधान' पर कार्यक्रम

कोलकाता महानगर की प्रसिद्ध साहित्यिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संस्था श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा संविधान पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए प.बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने कहा कि भारतीय संविधान में अंकित चित्र संविधान निर्माताओं की दूरदर्शिता का संकेत देते हैं।

नग्गी के शहीदों को श्रद्धांजलि

श्रीगंगानगर जिले के गांव नग्गी (श्रीकरणपुर) में भारत–पाक युद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि देने का कार्यक्रम नग्गी स्थित स्मारक व देवी मंदिर में 27 दिसम्बर, 2020 को सेना द्वारा हर वर्ष की भांति आयोजित किया गया। सीमाजन कल्याण समिति ने कार्यक्रम में सहयोग दिया।

सेवा भारती द्वारा तुलसी पूजन व हवन

सेवा भारती, उदयपुर द्वारा गीता जयंती के अवसर पर 25 दिसम्बर,2020 को विश्व कल्याण एवं निरोगता की कामना से हवन तथा तुलसी पूजन का आयोजन किया गया। श्री गोपाल कनेरिया ने इस अवसर पर कहा कि यज्ञ करने से वायुमंडल एवं पर्यावरण में शुद्धता आती है तथा संक्रामक रोग नष्ट हो जाते हैं।

समुत्कर्ष व्याख्यान माला में 'गीता' पर व्याख्यान

25 दिसम्बर,2020 को 'जीवन प्रबंधन का आधारः श्रीमद्भागवद्गीता' विषय पर ऑनलाइन समुत्कर्ष व्याख्यानमाला का आयोजन किया। रा.स्व.संघ के प्रचारक श्री ओमप्रकाश ने अपने व्याख्यान में कहा कि 'गीता' जीवन प्रबंधन का महान दर्शन है। 'गीता' मनुष्य को उसका धर्म बताती है। यदि हमारा आचरण शुद्ध होगा तो जीवन भी आनंदमय होगा।

निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

गत 2 जनवरी को सेवा भारती चिकित्सालय में निशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया जहाँ 123 रोगियों की जाँच, परामर्श व उपचार किया गया। शिविर का शुभारंभ स्थानीय ग्रामीण विद्यायक फूलसिंह मीणा ने किया।

तीसरी व चौथी में पढ़ रहे भाई-बहन ने लिखी रामायण

कोरोना काल में दूरदर्शन पर रामायण देखकर जालोर जिले के भाई-बहन 9 वर्षीय माधव एवं 6 वर्षीय अर्चना ने 8 माह में पूरी रामायण 2100 पृष्ठों में लिख दी। दोनों आदर्श विद्या मंदिर के विद्यार्थी हैं। उन्हें पूरी रामायण कंठस्थ याद है।

बहुआयामी है, यह लेखन- आदर्श विद्या मंदिर के प्रधानाध्यापक सत्यजीत चक्रवर्ती ने बताया कि इससे बच्चों का संस्कृति और इतिहास से जुड़ाव होता है। लेखनी में सुधार तथा पढ़ने-लिखने का स्वभाव भी बनता है।

रक्तदान शिविर में 203 यूनिट रक्त एकत्रित

गत 3 जनवरी को भारतीय अभ्युत्थान समिति श्री गुरुजी रक्तकोष के तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जयपुर महानगर की नगर इकाई करधनी और झोटवाड़ा में लगे इस शिविर में क्रमशः 100 और 103 यूनिट रक्त का संचयन हुआ। शिविर का आरंभ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक टोली के सदस्य श्री श्रीकांत ने किया।

सेवा भारती चिकित्सालय की बड़ी उपलब्धि

भीलवाड़ा की 9 वर्षीय मनीषा बिस्तर से उठ-बैठ नहीं सकती थी क्योंकि वह गत दो वर्षों से लकवे से पीड़ित है। परिवार वालों ने स्थानीय छोटे-बड़े अस्पतालों में इलाज करवाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। किसी के बताने पर वे इलाज के लिए उदयपुर के सेवा भारती चिकित्सालय पहुँचे और वहाँ इस बालिका का एक्यूप्रेशर और एक्यूपंचर चिकित्सा पद्धति से इलाज प्रारंभ हुआ। मात्र आठ दिनों के इलाज के बाद अब वह सहारे से चलने लगी है। चिकित्सालय के डॉक्टरों का कहना है कि कुछ समय बाद वह बिना किसी सहारे के चलने लगेगी। अभी तक इस चिकित्सा पद्धति से 45 हजार से अधिक रोगियों का इलाज किया जा चुका है।

डिप्रेशन क्यों?

श्रीकृष्ण से कितना कुछ छूटा...!
पहले माँ छूटी, फिर पिता छूटे...!
फिर जो नंद-यशोदा मिले, वे भी छूटे।
संगी-साथी छूटे... राधा भी छूटी।
गोकुल छूटा, फिर मथुरा छूटी।
श्रीकृष्ण से जीवन भर, कुछ न कुछ
छूटता ही रहा! नहीं छूटा तो देवत्व, मुस्कान और सकारात्मकता।
श्रीकृष्ण दुःख नहीं, उत्सव के प्रतीक हैं।
सब कुछ छूटने पर भी ,कैसे खुश रहा जा सकता है, यह श्रीकृष्ण से अच्छा कोई नहीं सिखा सकता। इसलिए हमेशा खुश रहें, सदा मुस्कुराते रहें ...

वैक्सीन

जो लॉकडाउन के समय यह बोल रहे थे कि-''दुनिया दवाई बनाने में लगी है और हम दिया जलाने तथा थाली बजाने में लगे हैं। ''... उन्हें अब यह बताने का समय आ गया है कि आज पूरी दुनिया हमसे वैक्सीन मांग रही है।

सेवा भारती की अनूठी पहल

सर्वजातीय सामूहिक विवाह फरवरी में

सेवा भारती, राजस्थान आगामी बसंत पंचमी (16 फरवरी, 2021) को सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन कर रही है। यह सम्मेलन जयपुर स्थित आदर्श विद्या मंदिर, अम्बाबाड़ी में रखा गया है। कोरोना के कारण इस बार केवल 21 जोड़े ही विवाह के बंधन में बंध सकेंगे।

सेवा भारती के क्षेत्र प्रचार प्रमुख उदयसिंह कुंतल ने बताया कि राजस्थान में सेवा भारती पिछले एक दशक से सामूहिक विवाह का आयोजन कर रही है। सेवा भारती का यह 10वां आयोजन है। उन्होंने यह भी बताया कि सामूहिक विवाह के लिए आगामी 1 फरवरी तक सेवा भारतीय कार्यालय, सेवा-सदन, सहकार मार्ग पर अपना पंजीयन करवा सकते हैं।

समाज में समरसता स्थापित करने तथा सर्व समाज को जोड़ने में सेवा भारती का यह प्रयास निश्चित रूप से मील का पत्थर साबित हुआ है।

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी - 1. कैकेयी 2. पांचजन्य 3. रोम 4. मलयाचल (नीलगिरि), कर्नाटक 5. दस 6. सम्राट विक्रमादित्य 7. महाभारत (शांतिपर्व) 8. लार्ड हार्डिंग पर बम प्रहार 9. एकलिंगनाथ 10. 492 वर्षों तक

उत्तर महापुरुष पहचानो- स्वामी विवेकानन्द

अखण्ड सेवाव्रती बाबा आमटे

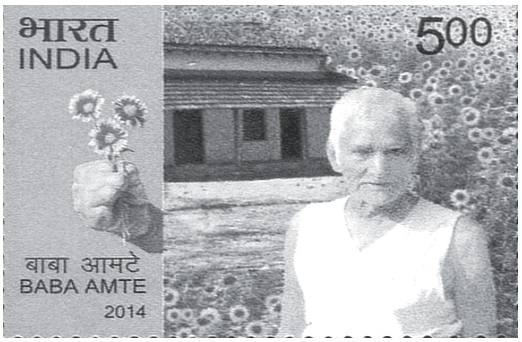

सेवा का मार्ग बहुत कठिन है, उसमें भी कुष्ठ रोगियों की सेवा तो अत्यधिक कठिन है। ऐसे लोगों को स्वयं भी रोगी हो जाने का भय रहता है; पर मुरलीधर देवीदास (बाबा) आमटे ने इस कठिन क्षेत्र को ही अपनाया। इससे उनके परिजन इतने प्रभावित हुए कि उनकी पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू और पौत्र भी इसी कार्य में लगे हैं। ऐसे समाजसेवी परिवार दुर्लभ ही होते हैं।

बाबा आमटे का जन्म 26 दिसम्बर, 1914 को महाराष्ट्र के वर्धा जिले के एक जमींदार परिवार में हुआ था। नागपुर विश्वविद्यालय से कानून की शिक्षा पाकर उन्होंने 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में बंदी सत्याग्रहियों के मुकदमे लड़े; लेकिन झूठ पर आधारित इस काम में उनका मन नहीं लगा। कुष्ठ रोगियों की दुर्दशा देखकर उन्हें बहुत कष्ट होता था। अतः उन्होंने इनकी सेवा करने का निर्णय लिया।

इस विचार का उनकी पत्नी साधना ताई ने केवल स्वागत ही नहीं किया, अपितु पूरा सहयोग भी दिया। दोनों ने कोलकाता जाकर कुष्ठ रोग के उपचार का प्रशिक्षण लिया और फिर दो पुत्रों प्रकाश व विकास तथा छह कुष्ठ रोगियों के साथ महाराष्ट्र के चन्द्रपुर में 'आनन्दवन' नामक आश्रम स्थापित किया।

बाबा को इस कार्य में आनंद का अनुभव होता था इसलिए उन्होंने इस आश्रम का नाम 'आनन्दवन' रखा। यद्यपि प्रारम्भ में उनका विरोध भी बहुत हुआ। उस समय धारणा यह थी कि कुष्ठ रोग पूर्वजन्म के पापों का फल है; पर बाबा ने इसकी चिन्ता किये बगैर अनवरत सेवा कार्य जारी रखा।

धीरे-धीरे आश्रम की प्रसिद्धि फैलने लगी। बाबा के मधुर व्यवहार और समर्पण भाव के कारण दूर-दूर से कुष्ठ रोगी इस आश्रम में आकर रहने लगे। बाबा ने उन्हें भिक्षावृत्ति से हटाकर छोटे कुटीर उद्योगों में लगाया, जिससे उन्हें आय होने लगी। इससे उन्हें स्वाभिमान एवं सम्मानपूर्वक जीने का नया मार्ग मिला। वर्तमान में इस आश्रम में हजारों की संख्या में कुष्ठ रोगी रह रहे हैं। बाबा आमटे सामाजिक सरोकारों से भी जुड़े रहते थे। जिन दिनों पंजाब में उग्रवाद चरम पर था, बाबा ने वहाँ का प्रवास किया। जब महाराष्ट्र में क्षेत्रवादी आन्दोलन ने जोर पकड़ा, तो बाबा आमटे ने साइकिल से पूरे भारत का भ्रमण किया। इसे उन्होंने 'भारत जोड़ो यात्रा' नाम दिया।

रक्त कैंसर (ल्यूकेमिया) और रीढ़ की बीमारी से ग्रसित होने के कारण जब उनसे बैठना सम्भव नहीं हो पा रहा था, तो वे लेटकर ही प्रवास, बातचीत और भाषण देने लगे। उन्होंने कुछ दवाओं का परीक्षण रोगियों से पहले स्वयं पर करवाया। यह बड़े साहस की बात है।

उन्हें पद्म विभूषण, डॉ. अम्बेडकर अन्तरराष्ट्रीय सम्मान, संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार सम्मान, रेमन मैगसेसे सम्मान, टेम्पलटन सम्मान आदि से सम्मानित किया गया।

अखंड सेवाव्रती बाबा आमटे का 9 फरवरी, 2008 को अपनी कर्मस्थली 'आनन्दवन' में देहांत हुआ। ■

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि (11 फरवरी) पर एक संस्मरण

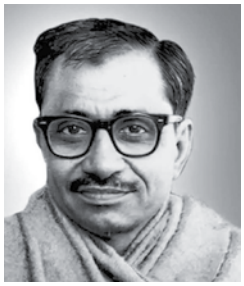

प्रतिद्वंदी की आलोचना अनैतिकता

पंडितजी जौनपुर संसदीय उपचुनाव के लिए जनसंघ के उम्मीदवार थे। उनके सभी भाषण अपनी ही रचनात्मक और शिक्षाप्रद शैली में हुआ करते थे। अभियान के दौरान मैंने एक बार कहा, *'पंडितजी, आपको अपने सार्वजनिक भाषणों में आक्रामक शैली को अपनाना चाहिए, यह मतदाताओं पर प्रभाव डालेगा।'*

पंडित जी ने हमेशा की तरह अपने तरीके से कहा, *'मैं चुनाव से नाम वापस ले सकता हूँ, लेकिन कुछ वोट हथियाने की आशा में अपनी भाषा में विष नहीं घोल सकता। मैं व्यक्तिगत आधार पर किसी भी प्रतिद्वंदी की आलोचना को राजनीतिक अनैतिकता मानता हूँ। इसीलिए मैं ऐसा नहीं कर सकता।'*

– यज्ञदत्त शर्मा, सांसद

सीख गुरु की

उत्तर भारत के पहाड़ी इलाके में एक गुरु का आश्रम था। उनके पास सुदूर क्षेत्रों से शिष्य शिक्षा ग्रहण करने आते थे। गुरु शिष्यों को धार्मिक के साथ व्यावहारिक शिक्षा भी देते थे। सभी शिष्य शिक्षा–समाप्ति के बाद अपने घरों को लौट गये, लेकिन एक शिष्य वहीं आश्रम में रह गया।

एक दिन उसने गुरुदेव से कहा–'गुरुदेव! मुझे कुछ समझ नहीं आता है, कोई मार्ग दिखायी नहीं दे रहा है। अक्सर मैं उन चीजों के बारे में सोचता रहता हूँ, जिनका निषेध किया गया है। मुझे उन चीजों को प्राप्त करने की इच्छा होती है, जो वर्जित हैं। मैं उन कार्यों को करने की योजना बनाता रहता हूँ, जिन्हें करना मेरे हित में नहीं है। मैं क्या करूँ?'

'गुरु ने शिष्य को पास ही रखे गमले में लगे एक पौधे को देखने के लिए कहा और पूछा–'यह क्या है?'

शिष्य के पास इसका कोई जवाब नहीं था। गुरु ने बताया यह एक विषैला पौधा है। यदि तुम इसकी पत्तियों को खा लो तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है, लेकिन देखने मात्र से यह तुम्हारा कोई अहित नहीं करेगा।

इसी प्रकार अधोगति की ओर ले जाने वाले विचार तब तक तुम्हें हानि नहीं पहुँचा सकते, जब तक तुम वास्तविक रूप से उनमें प्रवृत्त न हो जाओ। इसलिये मन में उठने वाले गलत विचारों से विचलित न होते हुए तुम्हें अपने लक्ष्य पर से ध्यान नहीं हटाना चाहिये।

मन में विचार तो आते हैं, आने देना चाहिये, पर यह ध्यान रखना जरूरी है कि विचार मन पर कब्जा न कर लें। मन विचारों के अधीन न हो जाये।

मन के अधीन जब तक विचार रहेंगे, तब तक ठीक है, पर जब विचारों के अधीन मन हो जाता है तो सब कुछ उल्टा–सीधा हो जाता है।

बाल प्रश्नोत्तरी

आपकी स्मरण शक्ति का स्तर क्या है? बाल मित्रों! पाथेय कण का 1 जनवरी, 2021 का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें और देखें कि आपकी स्मरण शक्ति का स्तर कैसा है। **सामान्य** : यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** : यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम** : यदि सभी प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।

1. श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए निधि समर्पण अभियान कब से प्रारम्भ हुआ?
(क) मकर संक्रांति (ख) माघ पूर्णिमा (ग) चैत्र पूर्णिमा (घ) वर्ष–प्रतिपदा

2. श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के कोषाध्यक्ष कौन हैं?
(क) नृत्यगोपाल दास जी (ख) गोविन्द गिरि जी (ग) माधवाचार्य जी (घ) वासुदेवानन्द जी

3. अयोध्या में बनने वाला श्रीरामजन्मभूमि मंदिर कितने मंजिल का होगा?
(क) चार (ख) दो (ग) तीन (घ) सात

4. नए कृषि कानूनों के समर्थन में कितने राज्यों के किसानों ने कृषि मंत्री को पत्र लिखा है?
(क) 20 (ख) 15 (ग) 21 (घ) 8

5. राजस्थान में भारतीय किसान संघ के लगभग कितने सदस्य हैं?
(क) पाँच लाख (ख) तीन लाख (ग) दस लाख (घ) आठ लाख

6. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता माधव गोविन्द वैद्य का हाल ही में निधन हो गया, उनका उपनाम क्या था?
(क) बाबूराव वैद्य (ख) बापूराव वैद्य (ग)गंगाराव वैद्य (घ) दादाराव वैद्य

7. अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का 56वां प्रांतीय अधिवेशन कहाँ आयोजित हुआ ?
(क) जयपुर (ख) सीकर (ग) बीकानेर (घ) जोधपुर

8. श्रीराम मंदिर निर्माण में सभी का सहयोग हो, इस हेतु न्यूनतम कितने रुपये का कूपन जारी हुआ है?
(क) बीस रुपये (ख) दस रुपये (ग) पाँच रुपये (घ) पचास रुपये

9. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक प्रो.राजेन्द्र सिंह का जन्मदिवस कब आता है?
(क) 25 जनवरी (ख)28 जनवरी (ग)29 जनवरी (घ) 30 जनवरी

10. प्रसिद्ध क्रांतिकारी रास बिहारी बसु की शहादत कब हुई थी?
(क) 15 जनवरी (ख) 5 जनवरी (ग) 10 जनवरी (घ) 21 जनवरी

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है ?

बाल मित्रों ! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- विश्व धर्म महासभा में आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया।
- आपका जन्म दिवस राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- आपने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

(उत्तर इसी अंक में है)

सर्दी में सूखे मेवे का सेवन कैसे करें

अखरोट, बादाम, अंजीर, मुनक्का इत्यादि सूखे मेवे पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, एण्टीऑक्सीडेंट होते हैं एवं अनेक औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं।

1. बादाम व अखरोट सेवन का तरीका– लगभग चार दाने बादाम एवं दो अखरोट रात्रि में पानी में भिगो कर रख देवें। प्रात:काल बादाम के दानों को छिलका उतार कर एवं अखरोट को वैसे ही भूखे पेट अच्छी तरह से चबा–चबा कर खाना चाहिये। यह अच्छे कोलेस्ट्रोल (एच.डी.एल.) को बढ़ाते हैं।

2. खजूर व किशमिश – यदि नियमित व्यायाम करते हैं, दिन भर शारीरिक श्रम वाला कार्य भी करते हैं तो अल्पहार के साथ 3 से 4 खजूर एवं किशमिश भी खा सकते हैं। यदि प्रात:काल के अल्पाहार में दूध लेते हैं तो खजूर को दूध के साथ उबाल कर लेना अच्छा रहता है। मधुमेह एवं मोटापे के रोगियों को अधिक कैलोरी युक्त मेवे यथा खजूर, किशमिश को अधिक मात्रा में नहीं लेना चाहिये।

3. अंजीर, मुनक्का – अंजीर व मुनक्का को प्रात: काल पानी में भिगो देवें, रात्रि सोते समय दूध के साथ उबाल कर धीरे–धीरे अच्छी प्रकार से चबा–चबा कर खाना चाहिये। मुनक्के के बीज निकाल कर अलग कर देने चाहिये। इससे कब्ज भी दूर होता है।

4. काजू – काजू अधिक वसा युक्त होते हैं जो कि अधिक मात्रा में खाये जाने पर कोलेस्ट्रोल को बढ़ाने का कार्य करते हैं। अत: अधिक शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्ति को ही काजू खाने चाहिये, दिन भर बैठे–बैठे कार्य करने वाले व्यक्ति को काजू नहीं खाने चाहिये।

5. अखरोट, बादाम, अंजीर, मुनक्का इन चारों को पानी में भिगो कर, दरदरा सा पीस कर, दूध में उबाल लेवें, दूध में थोड़ा केसर डाल देवें एवं ऊपर से पिस्ते एवं काजू की कतरन छिड़क कर पीने से शरीर मजबूत और मस्तिष्क स्वस्थ रहेगा।

इसे प्रात: काल अल्पाहार के साथ अथवा रात्रि में सोते समय ले सकते हैं।

–वैद्य श्रीराम तिवाड़ी, आयुर्वेदाचार्य, जयपुर

प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के सरल उपाय

अपने आहार में आंवला, नींबू, संतरा, टमाटर जैसे फलों को शामिल करें। ये विटामिन 'सी' तथा 'बी' के भंडार हैं। रोज लहसुन की कलियों का सेवन करने से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है। ककड़ी, गाजर, चुकंदर, प्याज खाएं। चोकर वाले आटे की रोटी खाएं। नाश्ते में मूँगफली के दाने, अंकुरित अनाज, दलिया आदि लें।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइये। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य–यदि 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ– यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. देवासुर संग्राम में महाराज दशरथ के साथ उनकी एक रानी भी थी, उसका नाम बताइये?
2. श्रीकृष्ण के शंख का क्या नाम था?
3. भारत की अवन्तिका (उज्जैन) नगरी के नाम पर एक पहाड़ी अवेंताइन–यूरोप के किस नगर में है?
4. चन्दन के वृक्षों के लिए प्रसिद्ध पर्वत कौन सा व कहाँ है?
5. ऋग्वेद में कितने मण्डल (खण्ड) हैं?
6. उज्जैयिनी के वे सम्राट कौन थे जिन्होंने शकों को परास्त कर एक नया संवत प्रारम्भ किया?
7. किस प्राचीन ग्रंथ में प्रकाश की गति की सटीक गणना की गई है?
8. 11 मई, 1915 को अवध बिहारी और भाई बालमुकुन्द सहित चार जाबांज क्रांतिकारियों की शहादत हुई थी। किस कारनामे के कारण उन्हें मृत्युदण्ड मिला?
9. मेवाड़ के सिसोदिया वंश के कुल देवता कौन हैं?
10. अयोध्या में भगवान श्रीराम के मंदिर की पुनर्स्थापना के लिए कितने वर्षों तक अनवरत संघर्ष चला?

(उत्तर इसी अंक में हैं)

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

1 से 15 फरवरी, 2021
(माघ कृष्ण 4 से माघ शु.4, विक्रमी 2077 तक)

जन्म दिवस

माघ कृ. 7 (इस बार 4 फरवरी)– स्वामी रामानन्दाचार्य
माघ कृ. 9 (इस बार 6 फरवरी)– भीष्म पितामह
12 फरवरी – श्री वल्लभ

अवसर

2 फरवरी– दस्तकार दिवस
9फरवरी – आदिनाथ निर्वाण दिवस

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

2 फरवरी (1829)– कित्तूर की रानी चेन्नम्मा का बलिदान
4 फरवरी (1670)– तानाजी मालुसरे का बलिदान तथा – कोंडाणा विजय
9 फरवरी (2008)– बाबा आमटे की पुण्यतिथि
10 फरवरी (1846)– सरदार शाम सिंह अटारी का बलिदान
10 फरवरी (1916)– शहीद सोहन लाल पाठक को फाँसी
10 फरवरी (1858)– राणा बख्तावर सिंह की शहादत
11 फरवरी (1968)– पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि
12 फरवरी (1883)– पूर्वांचल के क्रांतिकारी शम्भुधन फूंगलो की शहादत

पंचांग–माघ (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द – 5122, विक्रमी – 2077, शाके – 1942
(29 जनवरी से 11 फरवरी, 2021)

संकष्ट व तिलकुटा चतुर्थी व्रत–31 जनवरी, **एकादशी व्रत–** 7 फरवरी (स्मार्त) 8 फरवरी (वैष्णव), **प्रदोष व्रत–** 9 फरवरी, **देवपितकार्य/मौनी अमावस्या**–11 फरवरी, **पंचक–** 11 फरवरी को (रात 2.11 बजे) से प्रारम्भ

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 29 जनवरी स्वराशि **कर्क** में, 30–31 जनवरी व 1 फरवरी **सिंह** राशि में, 2–3 फरवरी **कन्या** में, 4–5 फरवरी **तुला** में, 6–7 फरवरी नीच की राशि **वृश्चिक** में, 8–9 फरवरी **धनु** राशि तथा 10–11 फरवरी **मकर** राशि में गोचर करेंगे।

माघ कृष्ण पक्ष में **गुरु** और **शनि** यथावत मकर राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी वृष व वृश्चिक राशि में गोचर करेंगे। **सूर्य** व **शुक्र** पूर्ववत मकर राशि में स्थित रहेंगे। **मंगल** भी मेष राशि में यथावत रहेंगे तथा **बुध** कुंभ राशि में रहते हुए 30 जनवरी को रात्रि 9.20 बजे वक्री होंगे एवं 1फरवरी रात 10.53 बजे पश्चिम दिशा में अस्त होंगे।

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

श्री सतीश पूनिया
प्रदेश अध्यक्ष, राजस्थान

श्री चन्द्रशेखर
संगठन मंत्री, राजस्थान

सभी देशवासियों को

मकर संक्रांति व गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें

श्री ओमप्रकाश गुप्ता
पूर्व जिला उपाध्यक्ष, भाजपा

श्री अंकुर गुप्ता
शहर मण्डल अध्यक्ष

शुभेच्छु : आम जनता,
नगरपालिका क्षेत्र निवाई, टोंक (राजस्थान)

नई चित्रकथा

राष्ट्रनायक नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारत के स्वतंत्रता समर में असंख्य ज्ञात-अज्ञात सपूतों ने अपना सर्वस्व अर्पित किया। विदेशी सत्ता के दमन से संघर्ष करते हुए नौजवान हंसते-हंसते फांसी के फंदे से झूल गये... अनगिनत वीरों ने यातनाओं की अंधी कोठरियों में अपना जीवन होम कर दिया। ... और संघर्ष की दर्दभरी लम्बी यात्रा के बाद मां भारती को गुलामी की बेड़ियों से मुक्ति मिली।

स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं व क्रांतिकारियों में सुभाष चन्द्र बोस का नाम सर्वोपरि है। उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा। किशोरावस्था में ही उन्होंने जीवन का लक्ष्य तय कर लिया था – 'भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति।'

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। उनकी तेजस्विता और जन-जन में लोकप्रियता अद्भुत थी। कांग्रेस में रहे तो उनकी लोकप्रियता व स्वीकार्यता गांधी जी के समकक्ष आ पहुंची।

विश्व पटल पर कई देशों के शासनाध्यक्षों से सुभाष जी को जो सम्मान व विश्वास मिला वह उन्हें विश्व नेता की श्रेणी में प्रतिष्ठित करता है।... 'जय हिंद'... 'दिल्ली चलो' व 'तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हें आजादी दूंगा' जैसे इनके दिये नारे व विचार उस समय जन-जन की जुबां पर थे।

ऐसे महानायक की प्रेरक, आदर्श व अविश्वसनीय जीवन यात्रा तथा देश को स्वतंत्र कराने के लिए उनके प्रयासों के महायज्ञ को उनकी जयंती के 125वें वर्ष में चित्रकथा के रूप में पाथेय कण के अगले अंक से शुभारंभ किया जा रहा है।

आशा है पूर्व की भांति यह चित्रकथा भी आपको अवश्य पसंद आयेगी। – सम्पादक

पाक्षिक
पाथेय कण
16 जनवरी, 2021

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87 अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23 JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

श्रीराम जन्मभूमि निधि समर्पण अभियान हेतु बैठकें

जयपुर (विहिप के श्री राजाराम, क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम, क्षेत्र संघचालक डा.रमेश अग्रवाल, प्रांत संघचालक श्री महेन्द्र सिंह मग्गो तथा श्री प्यारे लाल मीणा)

भीलवाड़ा (श्री कौशल कुमार गौड़, श्री फतेह चंद, सामसुखा, श्री गोपाल तथा डॉ.शंकर लाल माली)

श्रीगंगानगर(स्वामी सुखानंद, जिला संघचालक श्री अमरचन्द्र बोरड़, विभाग संघचालक श्री चिमन लाल, क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम)

सांगानेर (हाथोज धाम के महाराज बालमुकुंदाचार्य, क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम, विभाग संघ चालक डॉ.रामकरण शर्मा तथा सांसद रामचरण बोहरा)

कोटा (श्री गोपाल गर्ग, महामंडलेश्वर श्री हरिनारायण दास, श्री ताराचंद एवं श्री विजयानंद)

जोधपुर (श्री शंभू सिंह, श्री सुधीन्द्र दुग्गड़ तथा श्री प्रवीण जैन)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 जनवरी 2021 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____